नसरुद्दीन

ओडिले वीलरसे

चित्र: रेबेका डौट्रेमर

एक सुबह, नसरुद्दीन एक ताड़ के पेड़ की छाया में एक कालीन पर बैठा था, और दालचीनी वाला ऊंट का दूध पी रहा था, जब उसके पिता मुस्तफा ने उसे बुलाया: "नसरुद्दीन, जाओ और गधे को अस्तबल से लाओ. अब हम लोगों को बाजार जाना है."

"जी पिताजी," युवा लड़के ने अपनी टोपी और तुर्की चप्पलें पहनते हुए उत्तर दिया.

नसरुद्दीन गधे को अपने पिता के पास ले आया, और फिर दोनों ने मिलकर खजूर की एक बड़ी बोरी गधे की पीठ पर लाद दी.

मुस्तफा गधे की पीठ पर सवार हो गए, और नसरुद्दीन उनके पीछे-पीछे चलता गया. पिछली रात की बारिश से रास्ता अभी भी कीचड़ भरा था, इसलिए युवा लड़के ने अपनी चप्पलें गंदी होने से बचाने के लिए उतारकर हाथ में पकड़ लीं.

शहर के फाटक के पास, नसरुद्दीन और उसके पिता की मुलाकात सुंदर अरबी घोड़े पर सवार एक वज़ीर से हुई. जब उन्होंने मुस्तफा को देखा, तो वज़ीर ने अपने लोगों से कहा:

"देखें यहां का हाल! एक आलसी आदमी जो गधे पर बैठकर मौज-मस्ती कर रहा है और अपने बेटे को कीचड़ में चलने को मज़बूर कर रहा है!"

मुस्तफा ने शांति से उत्तर दिया: "सर, आपके शब्द मेरे कानों को चोट पहुँचा रहे हैं."

लेकिन नसरुद्दीन गुस्से से लाल हो गया. उसका दिल शर्म से भर गया. लोगों ने उनकी मजाक उड़ाने की हिम्मत की थी.

"मैं घर जा रहा हूँ," उसने घोषणा की. "मैं थक गया हूँ."

"इतनी जल्दी?" मुस्तफा ने कहा.

"घर पर कोई हमारा मज़ाक नहीं उड़ाएगा."

उसके पिता हँसे और कहा, "जैसी तुम्हारी इच्छा, मेरे बेटे."

अगले हफ्ते, नसरुद्दीन ने भेड़ों से ऊन काटा, जो गर्मी से बेहद पीड़ित थीं. भेड़ें ऊन काटने वाले छुरे से डर रही थीं, लेकिन लड़का बहुत सावधान था और उसने भेड़ों की कोमल गुलाबी त्वचा को चोट नहीं पहुंचाई.

जब उसका काम ख़त्म हुआ तो नसरुद्दीन ने ऊन की गेंदों को एक बड़े बोरे में इकट्ठा किया. उसके पिता ने आकर कहा: “बेटा, तुमने अच्छा काम किया है. जाओ गधे को लाओ, और हम ऊन को बुनकर के पास ले जाएंगे."

"आपकी जैसी मर्जी, पिताजी."
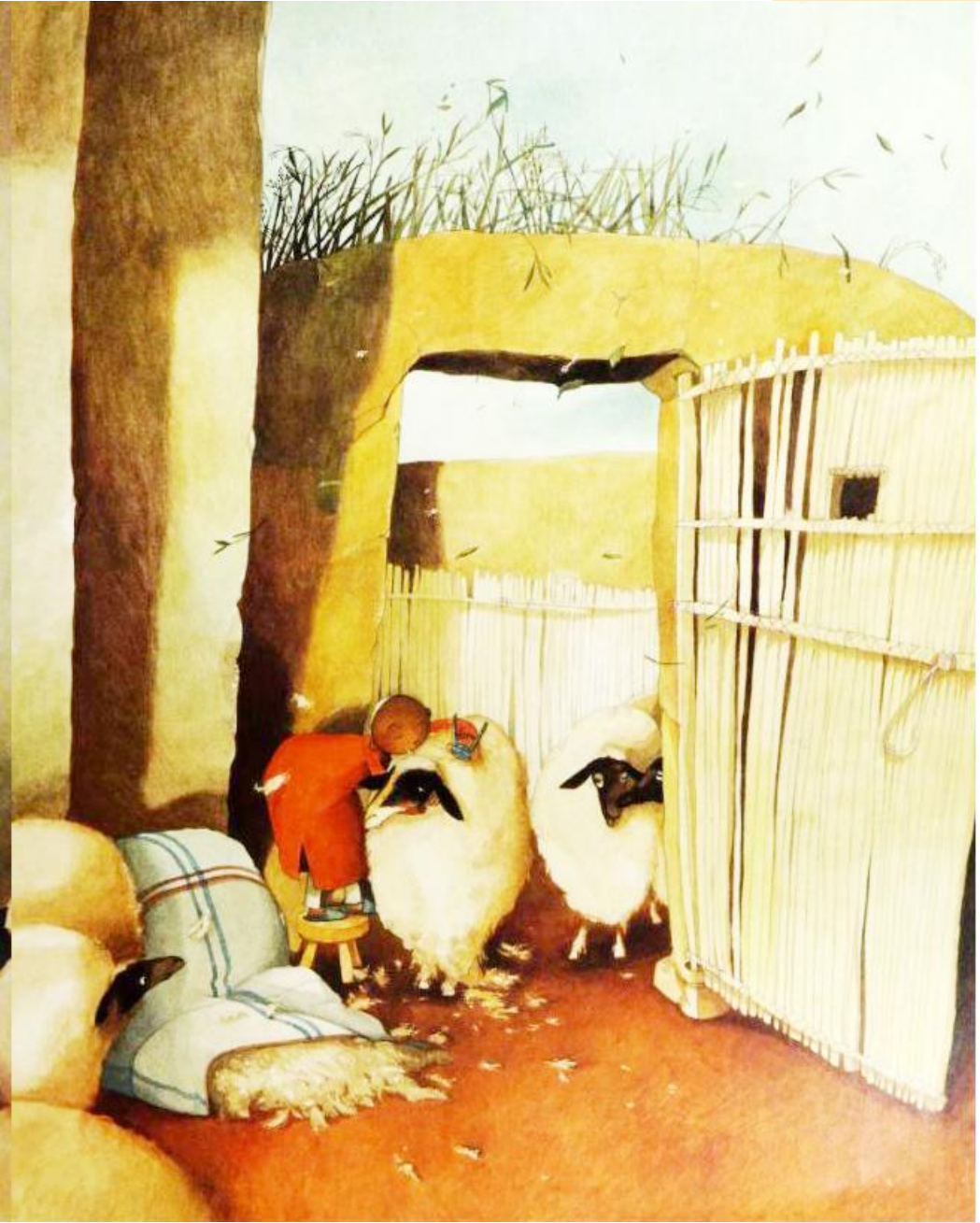
जब वो गधे के साथ वापस लौटा तो नसरुद्दीन लंगड़ा रहा था.

"मेरे पैर में मोच आ गई है," उसने कहा.

"अभी? इतनी थोड़ी दूर चलने से?"

"हाँ," नसरुद्दीन ने अपने पैरों की ओर देखते हुए कहा.

मुस्तफा जान-बूझकर मुस्कुराए. अच्छा, अगर चलने में दर्द हो रहा है, तो बेहतर होगा कि तुम गधे पर चढ़ जाओ."

नसरुद्दीन ने अपने लबादे को खींचा और फिर प्रसन्न होकर गधे पर चढ़ गया - कोई भी उसके पिता का शांतिपूर्वक पीछे चलने के लिए मज़ाक नहीं उड़ाएगा, जिनके सिर पर एक सुंदर पगड़ी बंधी थी.

नदी के किनारे सड़क पथरीली थी. वहाँ पर कपड़े धो रही महिलाओं ने खुरों की आवाज़ सुनकर उनकी ओर देखा. जैसे ही नसरुद्दीन और उसके पिता गुजरे, महिलाओं ने उन्हें घूरकर देखा.

“जरा देखो, दुनिया कितनी बदल गई है! बच्चा सवारी कर रहा है, और बूढ़ा उसके पीछे चल रहा है. लगता है बाप का कोई अधिकार ही नहीं है."

"तुम सही कह रही हो," दूसरे महिला ने कहा. अब कोई भी बूढ़ों का सम्मान नहीं करता है."

"वे दोनों चाहते तो एक साथ गधे पर आसानी से सवारी कर सकते थे," तीसरी महिला ने जोड़ा.

मुस्तफा शांत रहे और उन्हें दृढ़ता से उत्तर दिया: "बहनों, तुम्हारी बातें मेरे कानों को चोट पहुँचा रही हैं."
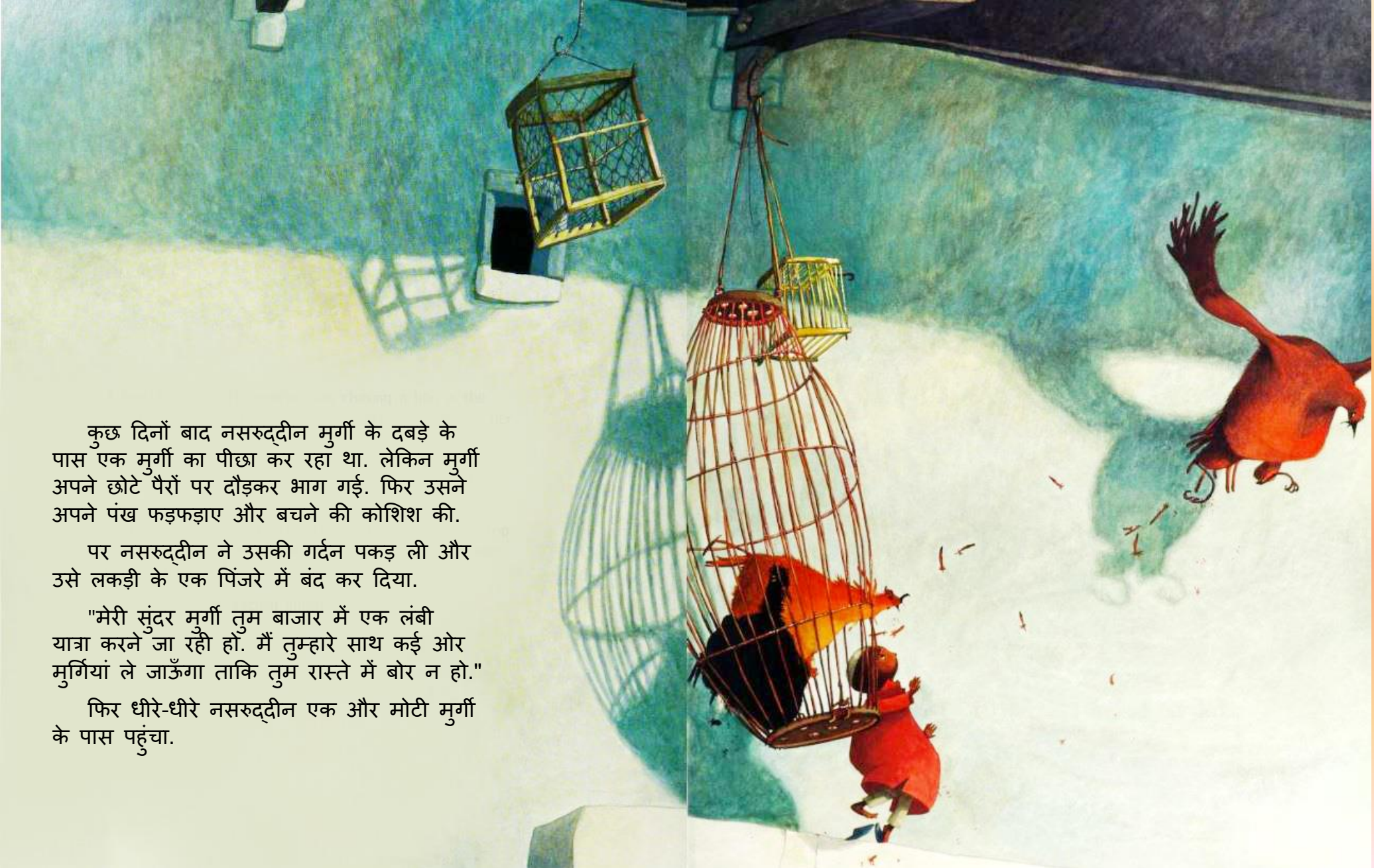
लेकिन नसरुद्दीन गुस्से से लाल हो गया और थोड़ी देर बाद जमीन पर उतर गया. "मैं घर वापस जा रहा हूँ - मैं भेड़ों के उनके बाड़े को बंद करना भूल गया!"

"अब तुम्हारे पैर में मोच नहीं है?"

"नहीं – वो अपने आप ठीक हो गई."

"ठीक है, जैसा तुम चाहो वैसा करो."

कुछ दिनों बाद नसरुद्दीन मुर्गी के दबड़े के पास एक मुर्गी का पीछा कर रहा था. लेकिन मुर्गी अपने छोटे पैरों पर दौड़कर भाग गई. फिर उसने अपने पंख फड़फड़ाए और बचने की कोशिश की.

पर नसरुद्दीन ने उसकी गर्दन पकड़ ली और उसे लकड़ी के एक पिंजरे में बंद कर दिया.

"मेरी सुंदर मुर्गी तुम बाजार में एक लंबी यात्रा करने जा रही हो. मैं तुम्हारे साथ कई ओर मुर्गियां ले जाऊँगा ताकि तुम रास्ते में बोर न हो."

फिर धीरे-धीरे नसरुद्दीन एक और मोटी मुर्गी के पास पहुंचा.

पिंजरे को पाँच मुर्गियों और एक मुर्गे से भरने के बाद, वो पिंजरे को वहां ले गया जहाँ पिताजी उसका इंतज़ार कर रहे थे.

"आज बहुत गर्मी है," नसरुद्दीन ने कहा. "चलने में थकान होगी. चलें, आज हम दोनों गधे पर सवारी करेंगे."

मुस्तफा शरारत से मुस्कुराए. "जैसा तुम चाहो, मेरे बेटे."

एक बार फिर, गधा सड़क पर आगे चला, इस बार उसकी पीठ पर बेटे और पिता के साथ-साथ पांच मुर्गियों और एक मुर्गे का पिंजरा भी था.

बाजार में एक कैफे के बाहर एक टेबल पर कुछ बूढ़े आदमी ठंडा नींबू पानी पी रहे थे. मुर्गियों की कुकड़ू-कूं ने उनका ध्यान खींचा. एक आदमी हँसा, उसके पड़ोसी ने ठहाका मारा, और फिर पूरा समूह हंसने लगा. तभी उनके सामने से गधा गुजरा जो बेटे, पिता, मुर्गियों और मुर्गे को ले जा रहा था.

“उस क्रूर आदमी को देखो जो अपने गधे को इतना कष्ट दे रहा है. बेचारा जानवर - उसका पेट लगभग जमीन को छू रहा है!" एक आदमी ने कहा.

"लड़का इतना आगे बैठकर गधे की गर्दन तोड़ रहा है," दूसरे ने टिप्पणी की.

“वो गधा इस गर्मी में थकावट से ज़रूर मर जाएगा. कुछ लोग अपने जानवरों के साथ कितना क्रूर व्यवहार करते हैं!"

"चुप रहो, बूढ़े मूर्खो. आपके शब्द मेरे कानों को चोट पहुँचा रहे हैं," मुस्तफा ने शांति से कहा, और फिर वे अपने रास्ते पर आगे चले.

बूढ़ों की नज़रों से ओझल होते ही नसरुद्दीन गधे पर बैठे हुए बड़बड़ाने लगा.

"क्या बात है?" उसके पिता ने पूछा.

“मेरी पीठ में पिन और सुइयां चुभ रही हैं. बेहतर होगा कि मैं नीचे उतर कर घर वापस चला जाऊं."

"चुभन? गधे की सवारी से? ऐसा कभी नहीं होता है," उसके पिता ने मुस्कुराते हुए कहा. "लेकिन अगर तुम यही चाहते हो तो वैसा ही करो."

अगले हफ्ते, नसरुद्दीन ने सोचा कि उसने सही समाधान ढूंढ लिया है.

"गधा थक गया है," उसने तरबूज के एक बड़े बैग को खींचते हुए कहा. "गधा आज सुबह दुखी दिख रहा था और मैंने जब उसे जो घास दी तो वो भी उसने नहीं खाई."

"हम अपने फल बाजार में कैसे लाएंगे?" उसके पिता ने मासूमियत से पूछा.

थोड़ा झिझकते हुए नसरुद्दीन ने सुझाव दिया: “हम गधे के पीछे-पीछे चल सकते हैं, फिर उसे केवल तरबूज ही ढोने होंगे. उसका लोड हल्का हो जाएगा."

"यह एक बढ़िया विचार है, मेरे बेटे," मुस्तफा ने शरारती मुस्कान के साथ कहा.

इतने हल्के भार के साथ, गधा तेजी से आगे चला - इतनी जल्दी कि मुस्तफा और नसरुद्दीन को उसके साथ चलने में परेशानी हुई.

रास्ते में एक छोटे लड़के ने हंसते हुए उनका पीछा किया. थोड़ी देर बाद, एक दूसरा लड़का भी उसके साथ मिल गया - फिर तीसरा, और चौथा. जल्द ही बच्चों की एक टोली, गधे और उसके मालिकों को देखकर हंस रही थी.

"वे हम पर क्यों हंस रहे हैं?" नसरुद्दीन ने अपने पिता से पूछा.

मुस्तफा ने अपनी शांत आवाज में जवाब दिया, "उनकी उम्र ही ऐसी है कि वो हर चीज का मजाक उड़ाते हैं. चलो आगे चलते हैं."
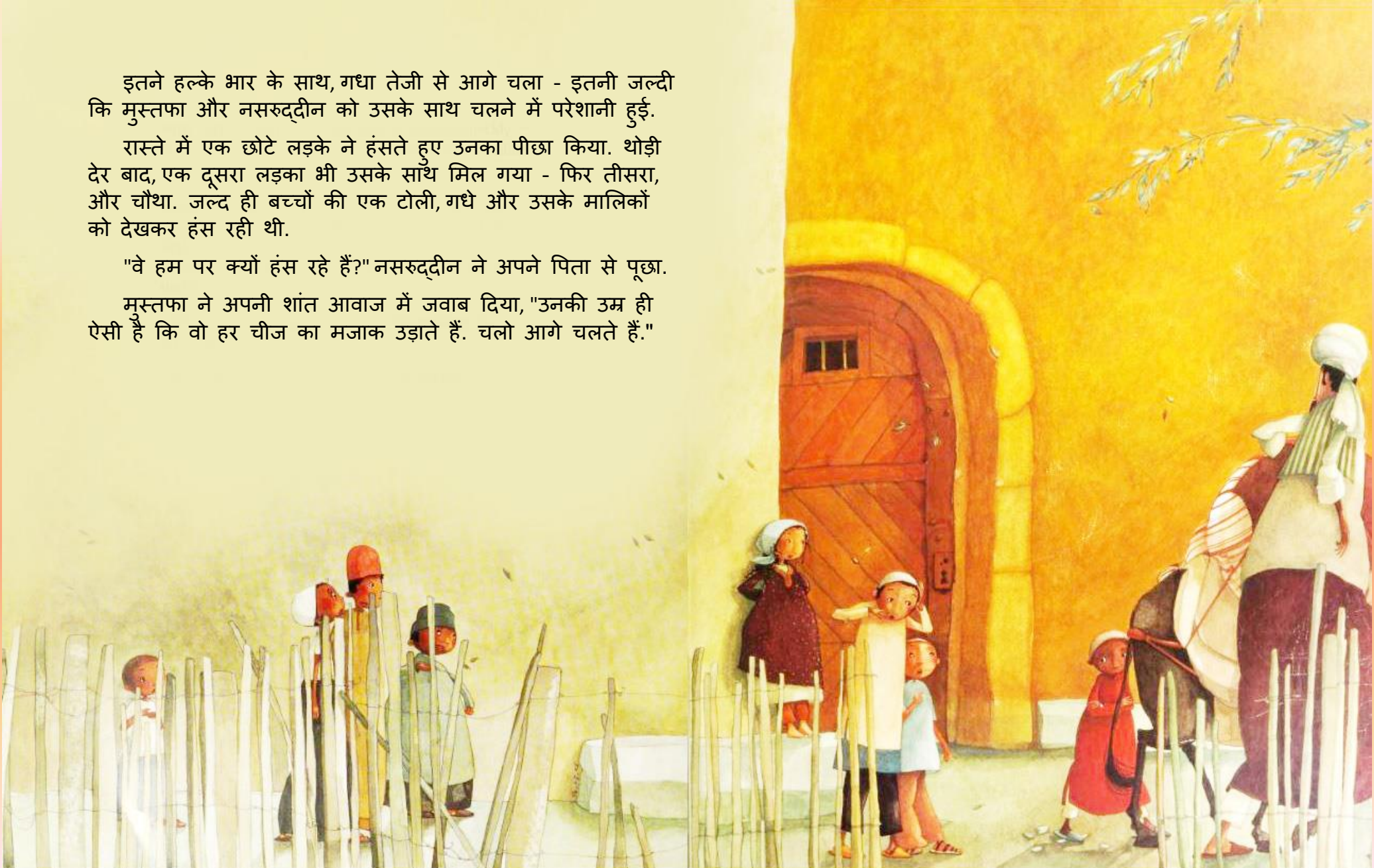
लेकिन एक छोटी लड़की ने जोर से कहा: "वे दोनों अपने गधे को थकाने के बजाय खुद को थकाना क्यों पसंद कर रहे हैं?"

"क्योंकि वे मूर्ख हैं!" लड़कों ने हंसते हुए कहा.

नसरुद्दीन को लगा कि उसका दिल फट जायेगा. वो मिर्च की तरह लाल हो गया और वहां से भाग गया.

कई दिनों तक नसरुद्दीन ने सोचा.

जब बाजार का दिन फिर आया, तो नसरुद्दीन गधे को अपने पिता के पास लेकर गया और उसने कहा: "पिताजी, मैंने बिना किसी का मज़ाक उड़ाए हमारे बाज़ार जाने का एक रास्ता खोज लिया है. हम दोनों लोग गधे को उठाकर ले जा सकते हैं."

मुस्तफा मुस्कुराए.

"तुम्हारी अकल कहाँ गई, मेरे बेटे? तुम्हारा सुझाव एकदम हास्यास्पद है. तुमने अभी तक जैसा चाहा, वैसा मैंने तुम्हें करने दिया, लेकिन आज तुम्हें अपनी गलती समझनी चाहिए."

"मैंने कोई गलती नहीं की है. मैंने सबकी बातें सुनी हैं!"

"यही तो तुम्हारी भूल है. लोग हमेशा तुम्हारी आलोचना करने का कोई-न-कोई कारण जरूर ढूंढ निकालेंगे. तुम्हें क्या लगता है कि हमें क्या करना चाहिए?"

"हमें उनकी बातें नहीं सुननी चाहिए?" नसरुद्दीन बुदबुदाया. वो इतना भ्रमित था कि उसकी आँखों से आँसू छलक पड़े.

"बिल्कुल, यह तुम्हें तय करना चाहिए कि तुम जो सुन रहे हो वो बुद्धिमानी है या यह केवल एक मूर्खतापूर्ण और आहत करने वाली टिप्पणी है."

नसरुद्दीन ने अपने पिता की ओर देखा और विजयी होकर घोषणा की: "मैं अब समझ गया हूँ! आप इस बात से नहीं डर सकते कि दूसरे लोग आपकी तारीफ़ करेंगे या आपका मजाक उड़ाएंगे."

फिर मुस्तफा गर्मजोशी से मुस्कुराए. "मुझे खुशी है कि अब मेरा बेटा, मेरी आँख का तारा, इतनी अच्छी तरह से तर्क करना सीख गया है."